ने। फिर तुम निवृत्ति मार्ग वालों का फॉलोवर बन ही। कैसे सकते हो। तो बाप बैठ समझाते हैं, पवित्र ना है। यह तो कोई और कह न सके। कहेंगे, शादी माना ही विकार में जाना। यहां तो बाप समझाते हैं, (बहु)त टेम्पटेशन है। पवित्र बन पवित्र दुनियां का, सारे विश्व का, 21 जन्म लिए मालिक बनते हैं। इसमें घाटा क्या है। बाप समझाते हैं, तुम प्रवृत्ति मार्ग के थे अभी शादी भल करो, पवित्र बनो तो विश्व के मालिक (ब)न जावेंगे। यह तो बहुत ही अच्छा है ना; इसलिए गंधर्व विवाह गाया हुआ है। तुम फरिश्ते बनते हो। (पा)वित्र को ही फरिश्ता कहा जाता है। पतित को तो फरिश्ता कह न सकें। बाप समझाते तो बहुत हैं, पवित्रा को ही सभी पसंद करते हैं। तब तो पवित्र के आगे, अपवित्र जाकर माथा टेकते हैं। तो क्यों न पवित्र (बने)। वहां है ही सभी पवित्र; इसलिए वहां कब कोई माथा नहीं टेकते। (दो)नों ही पवित्र हैं। ल. थोड़े ही...माथा टेकेगी। नहीं। यहां पवित्र–अपवित्र दोनों ही हैं। कहां से भी कोई सन्यासी पास करते देखेंगे तो (उ)नको हाथ ज़रूर जोड़ेंगे। कोई तो रास्ते ही पांव पड़ जाते हैं। ऐसे भी भक्त होते हैं। गुरु कपड़े वाला देखा (फि)र झुकाया। अभी बाप समझाते हैं उन्हों को तो तुम बहुत खिलाते–पिलाते हो। फायदा तो कुछ भी होता (न)हीं। जैसे मकड़ होते हैं तो ढेर के ढेर इकट्ठे निकलते हैं। सारी फसल ही खलास कर देते हैं। यह भी कितने ... सन्यासी हैं। इन्हों को तो तुम पांव भी पड़ते हो , खाना भी देते हो। प्राप्ती कुछ नहीं। ढेर सन्यासी डाकू। पुलिस को भी सन्यासी रूप में छोड़ दिया है तो जांच करते रहें। ड्रेस बदलने से सिकल ही बदली हो (ज)ाती है। बहुरूपी हो जाते हैं। अनेक वेष धारण करते हैं। फिर दुकानदार आदि जान जाते हैं। कहेंगे, (य)ह बहुरूपी आया है। भीख लेने का यह भी एक नमूना है। बाप को भी बहुरूपी कहते हैं ना। मनुष्यों को .... जो आता है सो बोल देते हैं। अर्थ ही कुछ नहीं समझते। कितना अनर्थ हो गया है। फिर भी रावण का राज्य (है) ना। पाण्डव और कौरव कहते हैं। पाण्डव अर्थात् पण्डे। तुम हो रूहानी यह है जिस्मानी। गीता से तो समझ सके, पाण्डव किसको कहा जाता है। पण्डे जिस्मानी और रूहानी दो प्रकार के होते हैं। तुम रूहानी पण्डों की (य)ात्रा ही रूहानी है। रात–दिन का फ़र्क है। वह नीचे जाते हैं तुम ऊपर जाते हो। तुम्हारी है याद की यात्रा। उन्हों का वह है पग यात्रा। यह परमात्मा सभी आत्माओं को ले जाते हैं। वह तो चारों तरफ़ धक्के खाते रहते ....। घर कोई भी पहुँच न सके। तुम यात्रा से ही घर पहुँच जाते हो। अभी तुम याद की यात्रा सीख रहे हो। और सृष्टि चक्र का नॉलेज भी बुद्धि में है। यह और कोई सिखला नहीं सकते। यह एक ही बाप है। ऐसा बाप जो विश्व का मालिक बनाते हैं! उनको कितने फारकती, डायवोर्स दे देते हैं। माया ऐसी ज़बरदस्त है जो ऐसे–2 (पो)जीशन वाले, जिनको नम्बरवन टू में समझते थे, वह है नहीं। यह भी ड्रामा में नूँध है। कोई कहते हैं बाबा (ह)म तो देरी से आए हैं। बाबा कहते हैं अहो सौभाग्य। पहले आते और आश्चर्यवत भागन्ती में हो जाते तो। (अ)भी तो मैं गुह्य ते गुह्य बातें सुनाता हूँ। तो तुमको अच्छा लगता है। परपक्व अवस्था में रह तुम किसको भी (स)मझा सकते हो। शुरू का और अभी का फ़र्क देखो कितना है। अभी तो इन्दिरा को, कोई गरंग सन्यासी आदि को भी .....गा सकते हो। होशियार हो गये हैं बच्चे। ऐसे नहीं कि देरी से आने से नापास हो जावेंगे, नहीं। स्कूल में भी कोई स्टूडेन्ट देरी से बैठते हैं तो फिर गैलप कर पास हो जाते हैं। बाबा भी देखते हैं देरी से आने वाले बहुत (ती)खे हो जाते हैं। सारा मदार है, पुरुषार्थ पर। पर कोई (की) तकदीर में नहीं है, तो भगवान की तदवीर क्या करेंगी। भगवान तो सभी की तकदीर बनाते हैं। सारी राजधानी है उसमें सभी प्रकार के होते हैं। बेहद के बाप द्वारा बेहद की पढ़ाई। तो इतना पुरुषार्थ भी करना चाहिए। पुरुषार्थ तो बहुत करते ही नहीं हैं। लागत है, किसका शरीर में, किसका बच्चों में मोह। शिवबाबा फट कह देते हैं, तुम्हारे में मोह है बहुत। बंदरी हो तो ऊँच पद पा(ये) न सकेंगी। कहते हैं, भगवान ने दिया। सतयुग में ऐसे नहीं कहते। (व)हाँ कब भीख नहीं मांगेंगे। समझते हैं, भगवान ने दिया, फिर लेता है तो अफसोस क्यों? सब दे दो। ट्रस्टी हो सम्भालो। ट्रस्टी मोह नहीं रखेंगे। अच्छा गुडमॉर्निंग।